No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-1

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

09314

दिसम्बर, 2016

एम.एच.डी.-1 : हिन्दी काव्य-1

(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **चार** प्रश्नों के उत्तर देने हैं । **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है । शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) मन ना रँगाये रँगाये जोगी कपरा ।
आसन मारि मंदिर में बैठे
ब्रह्म-छाँड़ि पूजन लागे पथरा ।।
कनवा फड़ाय जटवा बढ़ौले
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होई गैले बकरा ।
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले
काम जराय जोगी होय गैले हिजरा ।।
मथवा मुँड़ाय जोगी कपड़ा रंगीले,
गीता बाँच के होय गैले लबरा ।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरवाजा बाँधल जैबे पकड़ा ।।

(ख) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी ।
अहो मुनीसु महा भट मानी ।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू ।
चहत उड़ावन फूँकि पहारू ।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं ।
जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।।
देखि कुठारु सरासन बाना ।
मैं कछु कहा सहित अभिमाना ।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी ।
जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी ।।

(ग) झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै ।
हँसि बोलन में छबि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै ।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल-कंठ बनी जलजावलि द्वै ।
अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहे मनौ रूप अबै धर च्वै ।।

(घ) सुंदर सुरंग नैन शोभित अनंगरंग
अंग अंग फैलत तरंग परिमल के ।
वारन के भार सुकुमार को लचरा लंक
राजै परजंक पर भीतर महल के ।
कहै पद्माकर बिलोकि जन रीझैं जाहि
अंबर अमल के सकल जल थल के ।
कोमल कमल के गुलाबन के दल के
सु जात गढ़ि पाहन बिछौना मखमल के ।।

2. 'पृथ्वीराज रासो' के काव्यरूप पर विचार कीजिए । *10*

3. विद्यापति-पदावली की विशेषताएँ बताइए । *10*

4. प्रेमाख्यान के रूप में 'पद्मावत' की विशेषताएँ बताइए । *10*

5. सूर-काव्य में वर्णित वात्सल्य और शृंगार की विवेचना कीजिए । *10*

6. मीरा के काव्य-सौंदर्य के विभिन्न पक्षों पर विचार कीजिए । *10*

7. रीति काव्य-परम्परा में बिहारी का स्थान निर्धारित कीजिए । *10*

8. घनानंद की कविता में अभिव्यक्त प्रेम-संबंधी दृष्टिकोण की समीक्षा कीजिए । *10*